INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 7.560 (SJIF 2024)

सामाजिक माध्यमों का अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण हेतु उपयोग

(Use of social media for interpersonal communication)

डॉ० मनीषा वाजपेई
शोध निर्देशिका (शिक्षाशास्त्र)
सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय,
रायसेन (म०प्र०)

अनन्त प्रकाश शुक्ल
शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र)
सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय,
रायसेन (म०प्र०)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2024-26116554/IRJHIS2409002

सारांश —

प्रस्तुत शोध पत्र वर्तमान समय में सामाजिक माध्यमों का अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण हेतु समाज में प्रयोग अनवरत बढता जा रहा है आज व्यक्ति अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण हेतु विभिन्न प्रकार के सामाजिक माध्यमों के अनुप्रयोगों का प्रयोग करता है आज भारत में निवास करने वाले ७० से ८० प्रतिशत लोग इण्टरनेट का प्रयोग करते हैं और उसमें भी खास बात ये है कि अधिकतम लोग अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण हेतु सामाजिक माध्यमों का उपयोग करते हैं।

मुख्य शब्द — *सामाजिक माध्यम, अन्तर्वैयक्तिक, सम्प्रेषण, इण्टरनेट*

प्रस्तावना :

वर्तमान युग बदलाव का युग है आज की पीढ़ी अपने समय में एक बड़े बदलाव को महसूस कर रही है आज के समाज में एक बड़ा बदलाव दिखाई पड़ रहा है भारतीय व्यवस्था में मौलिक मेलजोल का बड़ा महत्व रहा है भारतीय अपनी परम्परा के अनुसार एक बड़े समाज की कल्पना करतै है जीवनभर सामाजिक बंधनों में बंध कर अपना जीवन व्यतीत करता है। अपने किसी भी धार्मिक एवं पारिवारिक आयोजनों में अपने समाज को एकत्र करने की प्रवृत्ति रहती है। भारतीय परम्परा में समाज विहीन व्यक्ति पशु के समान माना जाता है कहने का तात्पर्य ये है कि मनुष्य एक सामामजिक प्राणी है और बिना समाज के मनुष्य पशुवत जीवन व्यतीत करता है परन्तु आज के आधुनिक समाज में भौतिक समाज के इतर आभासी समाज की परिकल्पना खूब फल फूल रही है।

आभासी समुदाय :—

अभासी का तात्पर्य ऐसे समाज से है जो सामाजिक माध्यमों के माध्यम से जुड़ते है और सम्भावित हितों या लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भौगोलिक आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक मुद्दों पर

विचार विमर्श करते हैं जो कि आज के समाज के लिए भौतिक समाज से कम समय और कम खर्चे से सम्भव है इसका प्रचलन पहले तो था ही लेकिन कोविड–१९ के आने के बाद जब पूरे विश्व में भौतिक रूप से सामाजिक बनने की समस्या सामने आयी तो आभासी समाज अपने पूर्ण स्वरूप में सामने आ गया आभासी समुदायों को आनलाइन समुदाय या कम्प्यूटर मध्यस्थ समुदाय (Computer mediate community) के नाम से जाना जाता है।

अभासी समुदाय ऐसे लोगों के समूह से बनता है जो एक विचार रूचि या किसी प्रेरणा से जुड़े होते हैं और इससे जुड़ने के लिए किसी डिजिटल मंच पर मिलते हैं जहॉ वे एक दूसरे से सम्बन्ध बनाते हैं। इसके उपरान्त वे किसी कार्य विशेष को प्रगति करने या आपसी सामंजस्य को मजबूत करने हेतु एक दूसरे के अनुभवों को साझा करते हैं। इन समुदायों का नेतृत्वकर्ता आमतौर पर कोई एक निर्माता या मेजबान होता है।

सामाजिक माध्यम –

सामाजिक माध्यम हमारे रोजमर्रा के जीवन में है और इसमें बदलाव होते रहेंगे। सामाजिक माध्यमो का उपयोग वर्षों से बढ़ रहा है, इसलिए समाज पर इसकी पकड़ बहुत मजबूत है। सामाजिक माध्यम को सामान्यीकृत करते हुए, हम दिन के लगभग हर समय मीडिया के विभिन्न रूपों के संपर्क में रहते हैं। मीडिया क्या है, इस सवाल का जवाब देने से सोशल मीडिया को समग्र रूप से बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। मीडिया को जनसंचार के एक तरीके के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें कार में बैठकर रेडियो पर विज्ञापन सुनना से लेकर एक्स ऐप पर स्क्रॉल करना फेसबुक व्हाट्सएप का प्रयोग शामिल हो सकता है। हम सामान्यीकृत मीडिया की तुलना में सामाजिक माध्यम के संपर्क में कम आते हैं, लेकिन संपर्क में आने पर यह अधिक मात्रा में आता है। उदाहरण के लिए, जो लोग सुबह उठते हैं और ऐक्स, फेसबुक, व्हाट्सएप आदि देखते हैं, उनके लिए हर स्क्रॉल के साथ सूचनाओं की बाढ़ सी आ जाती है। राजनीति से लेकर खेल और सेलिब्रिटी समाचार तक सब कुछ उंगलियों पर उपलब्ध है। चिंता केवल अत्यधिक जानकारी पर ही केंद्रित नहीं है, बल्कि टिप्पणियों और विचारों की अत्यधिक संख्या पर भी केंद्रित है। अगर हम सामाजिक माध्यम से पहले किसी चीज पर बहस या बात करना चाहते थे, तो यह व्यक्तिगत रूप से, आमने–सामने किया जाना था। अब सामाजिक माध्यम के साथ, हम एक बैकअप अकाउंट पर टिप्पणी अनुभागों में लोगों से लड़ने में सक्षम हैं, जिसका नाम अलग है और जो हम वास्तव में हैं उससे कोई संबंध नहीं है। संचार का यह नया रूप लोगों से बात करने और वास्तविक बातचीत करने की भेद्ता को दूर करता है, और इंटरनेट ट्रोल के रूप में इसकी भरपाई करता है।

अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण –

अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण वह संप्रेषण है, जो एक व्यक्ति के भीतर होता है। इसमें बाहरी और आंतरिक दोनों तरह की विभिन्न उत्तेजनाओं का प्रसंस्करण और व्याख्या सम्मलित होती है। यह व्यक्तियों को अपने स्वयं के विचारों और भावनाओं को संसाधित करने और व्याख्या करने की अनुमति देता है और फिर उन्हें क्रिया में अनुवादित करता है। यह एक प्रकार की आत्म–चर्चा है, जो हमें अपने विचारों और भावनाओं

को समझने और अपने व्यवहार की योजना बनाने और उनकी निगरानी करने में सहायता करती है।

यह हमें स्वयं को बेहतर ढंग से समझने और बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है। अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण दो या दो से अधिक लोगों के बीच विचारों का आदान—प्रदान है और जहां दोनों प्रतिभागी एक दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं। यह सूचना का एक गतिशील, दोतरफा प्रवाह है। संप्रेषण में प्रेषण और प्राप्त करने को सम्मलित किया गया है।इसमें आमने—सामने सूचनाओं का आदान—प्रदान, आवाज, चेहरे के हाव—भाव, और इशारों को सम्मलित किया गया है। उदाहरण के लिए एक बेटे और एक पिता, एक नियोक्ता और एक कर्मचारी, दो बहनों, एक शिक्षक और एक छात्र, और इस तरह के अन्य लोगों के मध्य होने वाला संप्रेषण अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण

जन संप्रेषण —

यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति, व्यक्तियों का समूह, या संगठन एक संदेश बनाता है और इसे किसी प्रकार के माध्यम से एक बड़े, नामरहित, विषम दर्शकों तक पहुंचाता है। जनसंप्रेषण के श्रोतागण ज्यादातर विभिन्न संस्कृतियों, व्यवहार और विश्वास प्रणालियों से निर्मित होते हैं। उदाहरण के लिए वाणिज्यिक विज्ञापन, जनसंपर्क, पत्रकारिता और राजनीतिक प्रचार।

सामाजिक माध्यमों का अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण हेतु उपयोग —

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी रहा है लोगों से जुड़ना अपने विचारों को साझा करना मानव की प्रवृत्ति रही है, मनुष्य सदैव अपने से दूर रहने वाले परिवार के सदस्यों रिश्तेदारों एवं समाज के लोगों से जुड़ने के लिए सदैव तत्पर रहता है और प्राचीन काल से ही इसके लिए विभिन्न व्यवस्थाएं बनाता रहा है। दूर रहने वाले लोगों से जुड़ने के लिए मानव पहले पत्राचार करता था और अपने सगे सम्बंधियों से पत्राचार के माध्यम से जुड़ता था जिसमें समय अधिक लग जाया करता था परन्तु जब से भारत में इण्टरनेट और संगणक ने कदम रखा लोगों को लोगों से जुड़ना आसान हो गया है। अब केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में किसी भी देश में बैठे किसी भी मानव से हम कुछ ही सेकेण्ड में जुड़ सकते है अपनी बातों को साझा कर सकते हैं और इतना ही नहीं आज की आभासी दुनिया ने हमें आभासी समाज बनाने की सुविधा भी प्रदान कर दी है। सामाजिक माध्यमों ने आज एक साथ एक बड़े समुदाय से घर बैठकर विचार विमर्श करने अपने विचार देने और दूसरों के विचार लेने की सुविधा प्रदान की है कहने का तात्पर्य ये है कि आज सामाजिक माध्यमों ने अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण को आसान बना दिया है आज हमारे पास मोबाइल में विभिन्न प्रकार के सामाजिक माध्यमों के अनुप्रयोग (ऐप) मौजूद रहते हैं जिनके माध्यम से हम अपने मित्रों सम्बन्धियों, रिश्तेदारों आस पास के लोगों के साथ अलग—अलग या एक साथ आभासी रूप से जुड़ जाते हैं और अपनी किसी समस्या या किसी विषय पर विचार विमर्श कर सकते सामाजिक माध्यमों के आने से लोगों का आपस में मेलजोल बढ़ा है अब व्यक्ति बहुत कम धन और समय को खर्च कर लोगों से सम्पर्क कर लेता है और आभासी दुनिया में अपने संबंधों को बना लेता है आसानी से विश्व के किसी कोने से कोई भी खबर मिनटों में प्राप्त कर लेता है अपना संदेश अपने अपनों को आसानी से पहुँचा देता है अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण आज के समय में बहुत आसान हो गया है वही अगर

इसके कुप्राभव को देखा जाय तो कुछ समाजशास्त्री अपनी राय देते हैं सामाजिक माध्यमों के प्रचलन से मानवों के सामाजिक होने में कमी आयी है आज का मानव अपने भौतिक समाज से दूर हो रहा है वो भौतिक रूप से अपने समाज से कटता जा रहा है वो समाज तो बनाता है लेकिन केवल स्वार्थ पूर्ति के लिए अपने आभासी समाज को बनाता है मानव के अंदर का भाव समाप्त होता जा रहा है वो एक स्वार्थी पशु के भांति अपना जीवन व्यतीत कर रहा है अपने परिवार अपने समाज में मानव अलगसा रहने लगा है उसके अंदर से प्रेम की भावना समाप्त हो रही है मानव आभासी समाज से तो जुड़ गया है लेकिन भौतिक समाज से दूर होता जा रहा है।

निष्कर्ष —

सामाजिक माध्यमों का अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण हेतु उपयोग को देखा जाय तो आज भारत के लगभग ७० से ८० प्रतिशत लोग सामाजिक माध्यमों का उपयोग अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण करते हैं और आभासी रूप से अपने परिवार और समाज से जुड़ते है सामाजिक माध्यमों से मानवों का अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण बढ़ा है विशेष कर करोना के बाद यदि भारतीय परिप्रेक्ष में देखा जाय तो लोगों का रूझान अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण हेतु भौतिक रूप से कहीं अधिक सामाजिक माध्यमों से हुआ है वर्तमान का अधिकतर भारतीय मानव अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण हेतु विभिन्न प्रकार के सामाजिक माध्यमों का उपयोग कर रहा है।

संदर्भ :

1. अब्बास, जे., अमन, जे., नुरुन्नबी, एम., बानो, एस. (2019)। "टिकाऊ शिक्षा के लिए सीखने के व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव: पाकिस्तान में चयनित विश्वविद्यालयों के छात्रों का प्रमाण," स्थिरता, एमडीपीआई, ओपन एक्सेस जर्नल, वॉल्यूम। 11(6).

2. एडौगो, सी, क्यू।, ए, ओ, ओव्यूटा, चार्ल्स I, ओबोची। (2015)। "नाइजीरियाई युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव: अबा निवासियों का अनुभव", क्वेस्ट जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, Vo-3, अंक-3।

3. अहमद, इश्फाक और तहमीना फैज काजी। (2011)। "सोशल नेटवर्किंग साइट्स (एसएनएस) के शैक्षणिक प्रभावों के लिए एक नज़र: एक छात्र आधारित परिप्रेक्ष्य", अफ्रीकन जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, 5(12):5022-5031।

4. अली, ए., इकबाल, के., और इकबाल, ए. (2016)। "युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव: सरगोधा विश्वविद्यालय में एक केस स्टडी", उन्नत अनुसंधान वॉल्यूम-4, नंबर -11 की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका।

5. अलज़हरानी, सुल्ताना, और ईसाई, बाख। (2014)। "व्यक्तित्व विकास पर सोशल मीडिया का प्रभाव", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेशन एंड साइंटिफिक रिसर्च, 3(2):11-16।

6. बाजारोवा, एन.एन., चोई, वाई.एच., (2010)। "सोशल मीडिया में स्व-प्रकटीकरण: सामाजिक नेटवर्क साइटों, जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन पर प्रकटीकरण प्रेरणा और विशेषताओं के लिए कार्यात्मक दृष्टिकोण का विस्तार।

7. बर्कमैन, एस। (2007)। "व्हाई यूथ हार्ट्स सोशल नेटवर्क साइट्स", बर्कमैन सेंटर फॉर इंटरनेट एंड सोसाइटी, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, यूएसए।

8. भारद्वाज, ए., गौंडर, एस., अवस्थी, वी. (2017)। "भारतीय युवाओं पर सामाजिक नेटवर्किंग का प्रभाव- एक सर्वेक्षण", आई.जे. इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना इंजीनियरिंग की, खंड 7। साहित्य की समीक्षा 62

9. बर्क, एम।, क्रौट, आर, ई।, और मार्लो, सी।, (2011)। "फेसबुक पर सामाजिक पूंजी उपयोग और उपयोगकर्ताओं को अलग करना" कंप्यूटर विज्ञान, मनोविज्ञान, कंप्यूटिंग सिस्टम में मानव कारकों परSIGCHI सम्मेलन की कार्यवाही।

10. कैलेंकी, ओ।, इविंग, एल।, नारदुची, एल, डी।, होर्गन, एस। (2017)। "कैसे सोशल नेटवर्किंग साइट्स युवाओं को चिंता से प्रभावित करती हैं - एक चिंता विकार निदान के साथ किशोरों के बीच फेसबुक तनाव का एक गुणात्मक अध्ययन", साइबर साइकोलॉजी, जर्नल ऑफ साइकोसोशल रिसर्च ऑन साइबरस्पेस, 11 (4)।

International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies
IRJHIS